Natnagar Shodh Sansthan, Sitamau, M.P.

By
Dr. Ambika Dhaka
Head, Dept. of History,
M.G.S.U., Bikaner

Natnagar Shodh Sansthan, Sitamau, M.P.

नटनागर का परिचय

- राजा राजसिंह की रानी राजकुंवर चावड़ीजी की कोख से लदूना के राजमहलों में महाराजकुमार रतनसिंह का जन्म सोमवार, वैशाख बदी 1 सं0 1865 वि0 (11 अप्रेल, 1808 ई0) के दिन हुआ । रतनसिंह का बचपन लदूना के राजप्रासादों में व्यतीत हुआ । रतनसिंह की बाल्यकाल की अधिक बातें तो ज्ञात नहीं हैं। परन्तु यह बात प्रसिद्ध है कि विद्या अध्ययन के साथ ही जीवन का बहुत कुछ समय व्यायाम और आखेट में ही बीता । नियमित व्यायाम के कारण रतनसिंह का शरीर सुगठित और बलशाली बन गया था । शारीरिक बल के कई किस्से आज भी प्रसिद्ध हैं ।
राजा राजसिंह के योग्य निर्देशन में रतनसिंह ने उर्दू, फारसी, हिन्दी, ब्रज, संस्कृत और डिंगल भाषा का अध्ययन किया । अपने पिता व गुरु श्रृपदास से प्रेरणा प्राप्त कर रतनसिंह "नटनागर" उपनाम से हिन्दी, ब्रज, डिंगल, फारसी व उर्दू भाषाओं में कविता करने लगे । वि0सं0 1913 में 'नटनागर विनोद' की रचना की गई । रतनसिंह ने अपनी इस काव्य रचना में श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का सुन्दर चित्रण किया है । साथ ही अलंकार सौन्दर्य व भाषा माधुर्य भी देखने को मिलता है । नटनागर विनोद में अधिकतर ब्रजभाषा का उपयोग किया गया है । फिर भी कहीं-कहीं पर मालवा की प्रान्तीय भाषा की झलक भी दिखाई पड़ती है । इस रचना के साथ ही रतनसिंह ने उर्दू में एक "दीवाने उश्शाक" की रचना की थी, जिसकी संस्थान में अप्रकाशित प्रति है।

नटनागर का परिचय

- साहित्य प्रेम के साथ ही रतनसिंह को चित्रकला और संगीत का भी शौक था । रतनसिंह को घुड़सवारी का भी शौक था । घोड़ों के लक्षणों व गुणों पर "अश्व विचार" की भी रचना की थी। महाराजकुमार रतनसिंह दादूपंथी सन्त श्रूपदास से बहुत प्रभावित थे और उनको अपना गुरु मानते थे । वह संस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान थे । श्रूपदास और रतनसिंह के मध्य हुआ पत्र व्यवहार नटनागर विनोद में देखा जा सकता है । यह पत्र व्यवहार कविता में ही होता था । उसका संग्रह भी श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ में संग्रहीत है । रतनसिंह कविता प्रेम व कविता लेखन से कवि जगत में काफी प्रसिद्ध थे । उनकी साहित्यिक गोष्ठी में सूर्यमल्ल, चण्डीदान, हरीराम, गुरु भाई शिवराम, श्याम राव आदि कवि सम्मिलित थे । कविता करने के साथ ही रतनसिंह को काव्य ग्रंथों को संग्रहीत करने का भी शौक था । इसके लिए कई काव्य ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवाकर उनको संग्रहीत किया था । सीतामऊ की शासन व्यवस्था भी उन्ही के सुपुर्द थी । सीतामऊ राज्य के टांका संबंधी प्रकरणों को सुलझाने के लिए रतनसिंह ने ई0 सन् 1860 में ग्वालियर की यात्रा की। अंग्रेज अधिकारी ए.जी.जी. सेक्सपियर के माध्यम से ग्वालियर के महाराजा जयाजीराव से मुलाकात कर अपनी वाकपटुता से प्रसन्न कर टांके की राशि में 5000/- रुपये की छूट प्राप्त करने में सफल रहे थे । ग्वालियर से वापस लौटते हुए रतनसिंह ने गंगा स्नान किया व ब्रजभूमि की यात्रा भी की थी । महाराजकुमार रतनसिंह की मृत्यु अपने पिता के जीवनकाल में ही 55 वर्ष की आयु में घोड़े से गिरने के कारण मंगलवार, माघ वदी 3 सं0 1920 (26 जनवरी, 1864 ई0) की मध्यरात्रि को हो गई थी।

श्री नटनागर शोध संस्थान की स्थापना

- "यदि कभी स्वतन्त्र भारत में एक 'केन्द्रीय ऐतिहासिक संस्था' का निर्माण हुआ तो रघुबीर संग्रह इसकी अनिवार्य इकाई होगी । इसके पहले कि यह आदर्श साकार हो, राजपूताना -मालवा विश्वविद्यालय रघुबीर लायब्रेरी का पूर्ण उपयोग किये बिना हमारे देश के बीते काल पर कोई शोध कार्य नहीं कर सकता है । " आचार्य यदुनाथ सरकार द्वारा 1949 ई0 में देखे गये उपर्युक्त स्वप्न को साकार करने के लिए ही स्व0 डा. रघुबीरसिंह एम.ए., डी.लिट्., एल.एल.बी. ने अगस्त 14, 1974 ई0 को श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ (मालवा-म.प्र.) की स्थापना की । उन्होंने श्री रघुबीर लायब्रेरी सीतामऊ और अपने अन्य संग्रहों को इसमें सम्मिलित कर दिया । संस्थान की स्थापना का उद्देश्य न केवल श्री रघुबीर लायब्रेरी के संग्रह की सुरक्षा करना व उसे अधिकाधिक सुसमृद्ध बनाना था, अपितु ऐतिहासिक शोध-कार्य तथा अध्ययन के लिये सीतामऊ आने वाले शोधकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए पूर्व में सुलभ सुविधाओं को स्थायी, सुदृढ़ और चिर विकसित होते रहने वाले आधार पर सुव्यवस्थित करना भी था ।
श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ का पंजीकरण मध्यप्रदेश रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1973 (सं. 44, वर्ष 1973) के अन्तर्गत सं. 4081 पर दिनांक जनवरी 16, 1975 ई0 को हुआ । मध्यप्रदेश राज्य शासन ने संस्थान को एक विशेष उल्लेखनीय संस्था के रूप में मान्यता प्रदान की और 1975-76 ई0 के वर्ष से लगातार अधिकाधिक वार्षिक पोषण अनुदान देता जा रहा है ।

संस्थान के लक्ष्य और उद्धेश्य

- **संस्थान को विनिमयों के उल्लेखानुसार इसके लक्ष्य व उद्देश्य निम्नलिखित हैं-**
- **(A)**
- संस्थान के एक इकाई के रूप में श्री रघुबीर लायब्रेरी को हस्तगत करना, इसको समुचित रूप से सुव्यवस्थित व संगठित करना, पूर्णतया सुसमृद्ध करते रहना और इसकी समुचित सुरक्षा करना ।
- **(B)**
- संस्थान की एक इकाई के रूप में 'श्री केशवदास अभिलेखागार' की स्थापना, विकास और इसमें संगृहीत अभिलेखों आदि की समुचित रूपेण सुरक्षा करना ।
- **(C)**
- संस्थान की एक इकाई के रूप में 'श्री राजसिंह संग्रहालय' की स्थापना, उसका विकास और उसमें संगृहीत प्रदर्शनीय वस्तुओं आदि की सुरक्षा करना ।

संस्थान के लक्ष्य और उद्धेश्य

- **संस्थान को विनिमयों के उल्लेखानुसार इसके लक्ष्य व उद्देश्य निम्नलिखित हैं-**
- **(D)**
- ऐतिहासिक शोध और अध्ययनों के लिये माइक्रों फिल्मस अथवा अन्य साधनों द्वारा प्रतिलिपियाँ तैयार करने हेतु संस्था में एक इक अस्थापित करना, उसको संगठित कर उसका समुचित विकास करना।
- **(E)**
- ऐतिहासिक शोध और अध्ययन हेतु संस्थान में आने वाले संशोधकों को सुविधाएं और आवश्यक सहयोग देना और उसके अनुरोध किये जाने पर उनका मार्गदर्शन करना।
- **(F)**
- ऐतिहासिक शोध कार्य और अध्ययन के लिए आयोजित कार्यक्रमों के अतिरिक्त संस्थान द्वारा प्रारम्भ किये जाने वाली शोध परियोजनाओं के उचित निष्पादन हेतु एक शोध-केन्द्र की स्थापना कर उसे समुचित रूपेण सुव्यवस्थित करना ।

संस्थान के लक्ष्य और उद्धेश्य

- **संस्थान को विनिमयों के उल्लेखानुसार इसके लक्ष्य व उद्देश्य निम्नलिखित हैं-**
- **(G)**
- संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किसी भी प्रकार की वित्तीय अथवा अन्य प्रकार की सहायता प्राप्त करना ।
- **(H)**
- संस्थान के तत्वावधान में ऐतिहासिक शोध-कार्यों और अध्ययन हेतु छात्र-वृत्तियों की स्थापना करना ।
- **(I)**
- संस्थान की विभिन्न इकाइयों में उपलब्ध सामग्री और संस्थान की कार्यवाहियों आदि से संबंधित सूचियां (केटलोग) व पुस्तिकाएं आदि प्रकाशित करना और संस्थान में हुए अध्ययन व शोध कार्यों के परिणामों के प्रकाशनार्थ समुचित कार्यवाही करना या आवश्यक सहायता सुलभ करना ।
- **(J)**
- संस्थान के उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु अन्य संबंधित संस्थाओं द्वारा किए जा रहे कार्यों में पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करना ।
- **(K)**
- संस्थान में ऐतिहासिक शोध-कार्यों तथा अध्ययन द्वारा ज्ञान तथा विद्या का निरन्तर विकास करना ।

रघुबीर लायब्रेरी

- ”निरन्तर समृद्ध हो रहे एक ऐसे ग्रन्थागार के बारे में विश्व को बहुत कम जानकारी है, जिसके कारण कम से कम ऐतिहासिक अध्ययन के क्षेत्र में तो अवश्य ही मालवा प्रदेश का गौरवपूर्ण भविष्य सम्भव हो गया है । सीतामऊ में रघुबीर लायब्रेरी ही यह ग्रन्थागार है।“

Raghubeer Library

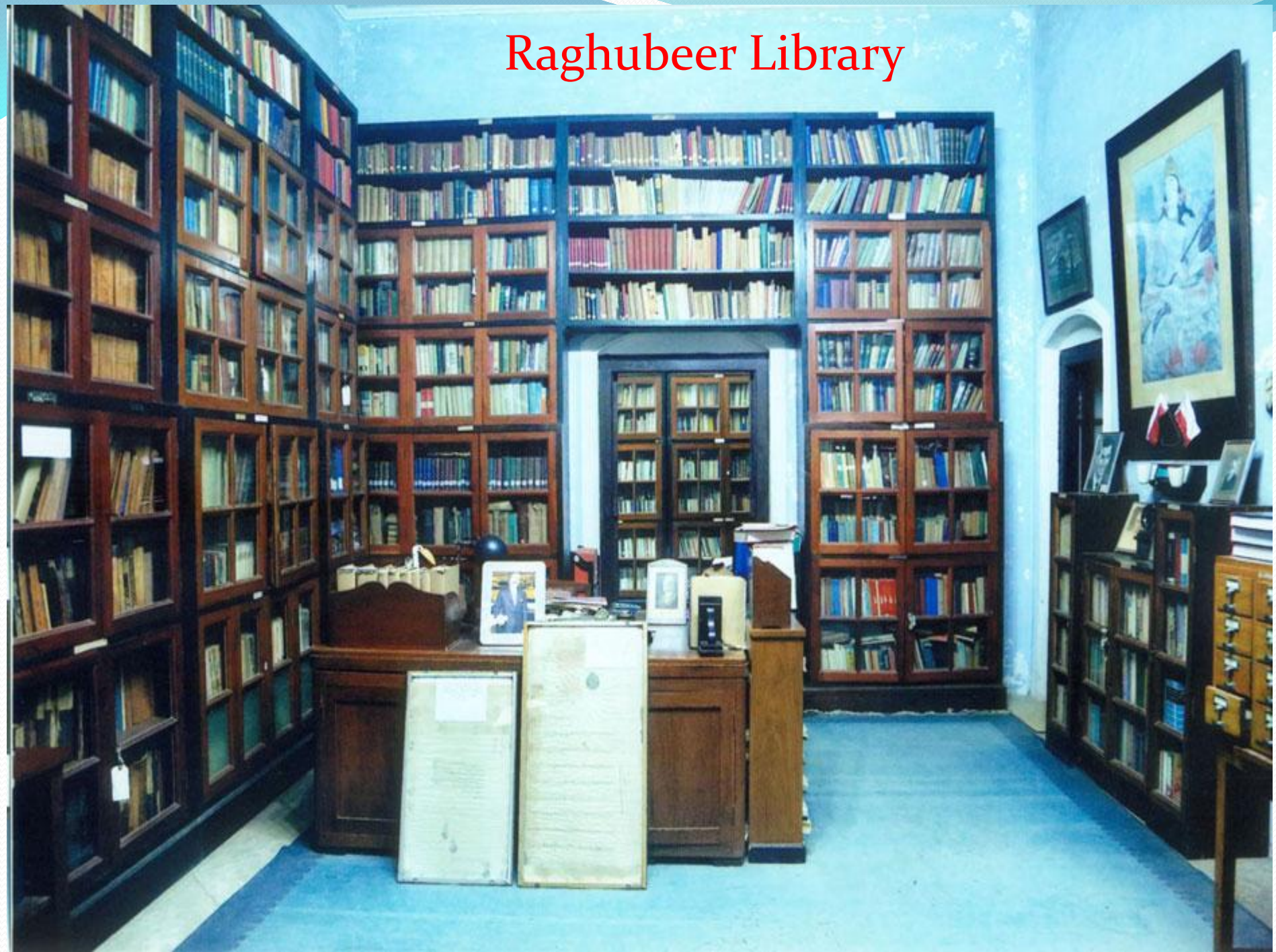

रघुबीर लायब्रेरी

- संप्रति श्री रघुबीर ग्रन्थागार में लगभग 40,000 से अधिक प्रकाशित पुस्तकें हैं । उनमें अधिकतर इतिहास विषयक हिन्दी, मराठी, फारसी और अंग्रेजी के दुर्लभ ग्रंथ हैं । ग्रन्थागार में 6,000 पाण्डुलिपियाँ, जो विभिन्न भाषाओं में यथा फारसी उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी, राजस्थानी, मराठी में है । इन दुर्लभ ग्रंथों में इतिहास, कविता, चिकित्सा, विज्ञान, धर्म, राजनीति व ज्योतिष संबंधी विभिन्न विषयों की जानकारी मिलती है ।

श्री केशवदास अभिलेखागार

- अक्तूबर, 1976 ई0 में भूतपूर्व सीतामऊ राज्य के अभिलेखागर को यथावत प्राप्त कर संस्थान ने इसकी स्थापना की । प्रारम्भिक काल की कुछ फारसी सनदों और मराठा आधिपत्यकाल के कुछ अभिलेखों को छोड़ते हुए, इस अभिलेखागार का मूल अभिलेख-संग्रह ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से प्रारम्भ होकर जून 30, 1948 ई0 तक का है

श्री केशवदास अभिलेखागार

- यहाँ हजारों मूल अभिलेखों के 412 बस्ते, लगभग 3000 बहियाँ और 2500 पुराने रजिस्टर हैं । भूतपूर्व सीतामऊ राज्य के "इंगलिश ऑफिस" (अंग्रेजी पत्र-व्यवहार के कार्यालय) की 450 फाइलों में हजारों महत्त्वपूर्ण पत्र और उनके उत्तर (मूल और सत्य प्रतिलिपियाँ) उपलब्ध हैं, जिनके द्वारा सीतामऊ राज्य का पिछले 50 वर्षों में अनेकानेक स्थानों से अंग्रेजी में हुए पत्राचार संबंधी जानकारी मिलती है । सीतामऊ राज्य के शासकों को प्रेषित किये गये खरीते आदि, अनेक गोपनीय पत्र, टांका रसीदें और ऐसी ही विशेष महत्त्वपूर्ण सामग्री यहाँ इस अभिलेखागार में बहुतायत से उपलब्ध है ।

श्री राजसिंह संग्रहालय

- मूल योजनानुसार संस्थान की तीसरी इकाई के रूप में श्री राजसिंह संग्रहालय की स्थापना के लिए डा. रघुबीरसिंह ने लदूना स्थित गढ़ संस्थान को भेंट स्वरूप प्रदान कर दिया है। यहाँ पर "राज-निवास" महल में इस संग्रहालय को व्यवस्थित किया जावेगा । इसमें इस क्षेत्र की कलाकृतियों के साथ ही भित्ती चित्रों और मनोहारी दृश्य से इसको दर्शनीय बनाया जायेगा ।

- एम.फिल. एवं पी.एच.डी. के शोधार्थियों को शोध पद्धति और शोध सामग्री के उपयोग का प्रशिक्षण देना तथा निर्देशन का कार्य करना।

- संस्थान के प्रकाशन को क्रय करने के लिए प्रकाशन मूल्य अदा
- **रिप्रोग्राफिक सेवाएं**
- लायब्रेरी और संस्थान के सदस्य अथवा शोध छात्र सशुल्क रिप्रोग्राफिक की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं । संस्थान के विधान अथवा अन्तर्राष्ट्रीय कापी एक्ट अधिनियम के तहत फोटो कापी की सुविधा प्रदान की जावेगी ।

- **डिजिटलाइजेशन करना**
- सम्पूर्ण पुस्तकालय को डिजिटलाइजेशन करने और ऑन लाइन सेवा देने के लिये हमने एक विस्तृत प्रोजेक्ट तैयार कर भारत सरकार के संस्कृति विभाग को प्रस्तुत किया है ।
- **आधुनिकीकरण**
- एक डेस्कटॉप कम्प्यूटर क्रय किया गया, जिससे कि संग्रहीत पुस्तकों की परिग्रहण संख्या दर्ज की जा सके और उनको कम्प्यूटरीकृत किया जा सके । सम्पूर्ण संग्रह को कम्प्यूटरीकृत करने के लिये एक प्रोजेक्ट तैयार किया गया है जिसमें पाँच कम्प्यूटर, पाँच स्केनर, पाँच प्रिन्टर, एक लेजर प्रिन्टर और एक प्रोजेक्टर क्रय करने का प्रावधान है । ।

•संस्थान द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन

- **पुस्तकालय सामग्री का परिरक्षण**
  संस्थान के संग्रह में हजारों हस्तलिखित ग्रंथ, दुर्लभ पुस्तकें और अभिलेखों का संग्रह है । अनेक महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों, अभिलेखों तथा दुर्लभ पुस्तकों की फोटो कापी का कार्य किया गया, साथ ही अभिलेखों के संरक्षण के लिये उनका लेमीनेशन भी कराया गया । पाण्डुलिपियों और अभिलेखों के संरक्षण, सुरक्षा के लिये एक विस्तृत प्रोजेक्ट भी तैयार किया है जिसे संस्कृति विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली को प्रस्तुत किया गया है ।